श्रीकृष्ण

जो कुछ तुमने किया लोक को सब कुछ वैसा याद ।
जो कुछ तुमने कहा न गूंजा सबके अंतर नाद ।। 1 ।।

जीवन तुमने जिया कठिनतर चित्त रहा अम्लान ।
हम संसारी बीच सुखों के भी रहते हैं ग्लान ।। 2 ।।

लीला था तब हेतु समूचा जीवन ही हे कृष्ण ।
हम क्रीड़ा में भी द्वंद्वी हैं छलमय और सतृष्ण ।। 3 ।।

तुम भोगों में भी निस्पृह थे हम रागी सन्यस्त ।
तुम समग्रता के ही विग्रह हम खंडों में व्यस्त ।। 4 ।।

पीछे मुड़कर तुम न देखते हम अतीत में मग्न ।
वर्तमान ही तुममें संतत हम त्रिकाल में भग्न ।। 5 ।।

रण में भी आध्यात्म बांटते जिव्हा पर मम धर्म ।
मात्र कर्म रुचि हममें तुममें शोभित सदा अकर्म ।। 6 ।।

फिर भी तुमने हमको माना अपना शाश्वत अंश ।
लोक तुम्हारा ही पाता है अति पापी भी कंस ।। 7 ।।

प्रकटे भू पर गत सम्वत्सर देखो पांच सहस्र ।
तुम्हे न जाना रहे जोड़ते जग में भोजन वस्त्र ।। 8 ।।

- शिव कुमार मिश्र
  11 अगस्त 2020
  भोपाल

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर शुभकामनाएं